

डॉ. भीमराव अंबेडकर के राजनीतिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

प्रोफेसर मुरारी लाल दायमा

प्राचार्य, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर

सार

डॉ. भीमराव अंबेडकर के राजनीतिक विचार वर्तमान समय में भी भारत के लोकतांत्रिक और सामाजिक ढांचे को मजबूत करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनकी प्रासंगिकता के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं: [1, 2]

1. सामाजिक लोकतंत्र और समता

- अंबेडकर का मानना था कि राजनीतिक लोकतंत्र तब तक अधूरा है, जब तक उसे सामाजिक लोकतंत्र का आधार न मिले—जिसका अर्थ स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व (भाईचारा) है। [1, 2]
- वर्तमान समय में जातिगत भेदभाव, सामाजिक विषमता और असमानता को दूर करने के लिए उनके विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। [1, 2]

2. संवैधानिक नैतिकता और विधि का शासन

- उन्होंने संविधान को केवल कानूनों का दस्तावेज नहीं, बल्कि "नैतिकता का दस्तावेज" माना था। [1]
- वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में धार्मिक ध्रुवीकरण और राजनीतिक नैतिकता के क्षरण के दौर में, अंबेडकर की 'संवैधानिक नैतिकता' का सिद्धांत यह याद दिलाता है कि व्यक्तिगत या धार्मिक निष्ठा से ऊपर संविधान और कानून होना चाहिए। [1, 2]

3. महिला सशक्तिकरण

- अंबेडकर का यह विचार कि "किसी समुदाय की प्रगति उस स्तर से मापी जाती है जिस स्तर पर उस समुदाय की महिलाएं आगे बढ़ी हैं," आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है। [1]
- महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और सम्मान देना आधुनिक समाज और राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी जरूरत है। [1]

4. राजनीति में 'व्यक्ति पूजा' (भक्ति) का विरोध

- उन्होंने चेतावनी दी थी कि राजनीति में 'व्यक्ति पूजा' या 'नायक पूजा' (Hero-worship) तानाशाही और पतन का निश्चित रास्ता है। अपनी स्वतंत्रता को किसी महान व्यक्ति के चरणों में समर्पित न करने की उनकी चेतावनी आज के राजनीतिक माहौल में बहुत महत्वपूर्ण है। [1]

5. एकपक्षीय तानाशाही और बहुमत के अंधविरोध का विरोध

- अंबेडकर वंशवादी शासन और केवल एक पार्टी के वर्चस्व वाले तंत्र के खिलाफ थे। उनका मानना था कि वास्तविक लोकतंत्र तभी सुरक्षित है जब सत्ता को बदलने की और उसकी आलोचना करने की स्वतंत्र क्षमता बनी रहे। [1]

6. वंचितों का प्रतिनिधित्व और आरक्षण

- समाज के शोषित, वंचित और पिछड़े वर्गों (SC/ST/OBC) को मुख्यधारा में लाने के लिए उन्होंने जिस प्रतिनिधित्व और सकारात्मक कार्रवाई (Affirmative Action) की वकालत की, वह आज भी सामाजिक न्याय और समावेशी विकास का आधार है। [1, 2]

परिचय

डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर भारतीय समाज, राजनीति और संविधान निर्माण के प्रमुख शिल्पकारों में से एक थे, जिन्होंने सामाजिक समानता, न्याय और स्वतंत्रता के मूल सिद्धांतों पर आधारित आधुनिक भारत की नींव रखी। उनका जीवन संघर्ष, विद्या, और समाज सुधार के अनवरत प्रयासों का प्रतीक है। इस शोध का उद्देश्य डॉ. अंबेडकर के राजनीतिक विचारों, लोकतंत्र की उनकी अवधारणा, और समाज में समानता तथा बंधुत्व की स्थापना के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करना है।

इस अध्ययन में प्रस्तुत (फनंसपजंजपअम) पद्धति अपनी गई है। विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों, डॉ. अंबेडकर के भाषणों, ग्रंथों और संविधान सभा की बहसों का समेकित अध्ययन कर उनके राजनीतिक चिंतन की प्रमुख अवधारणाओं को प्रस्तुत किया गया है। [1,2,3]

डॉ. अंबेडकर ने लोकतंत्र को केवल शासन प्रणाली नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का तरीका बताया। उनके अनुसार सच्चा लोकतंत्र वह है जिसमें सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ समाप्त हों तथा प्रत्येक नागरिक को समान अवसर मिले। उन्होंने संसदीय लोकतंत्र को सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली मानी हुए शक्ति के विभाजन, बहुदलीय व्यवस्था और प्रभावशाली विपक्ष की आवश्यकता पर बल दिया। वे मानते थे कि राजनीतिक समानता तब तक अधूरी है जब तक सामाजिक और आर्थिक समानता प्राप्त न हो। संविधान में उन्होंने सभी निकायों, विशेषतः दलितों, वंचितों, मजदूरों और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा हेतु अनेक प्रावधान किए।

डॉ. अंबेडकर के विचार आधुनिक भारत की लोकतांत्रिक आत्मा का आधार हैं। उनका चिंतन आज भी सामाजिक न्याय, समता और राष्ट्र की एकता को बनाए रखने के लिए प्रासंगिक है। उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को लोकतंत्र के तीन स्तंभ माने, जो भारतीय संविधान की आत्मा बन गए। अंबेडकर का योगदान न केवल भारत के संविधान में बल्कि विश्व के मानवतावादी चिंतन में भी शामिल है।

बाबा साहेब अंबेडकर की याद में इस हफ्ते एक बार फिर भारत और बाहर बड़ी संख्या में उनके चाहने वालों और फॉलोअर्स ने जश्न मनाया। शायद भारत का कोई दूसरा आज का लीडर, जिसे पूरे भारत में इतनी बड़ी संख्या में (ज़्यादातर बहुत दबे-कुचले) लोग अंबेडकर जितना याद करते हैं, उतना अंबेडकर को नहीं करते। एक समय के अछूत, जो अब खुद को दलित कहते हैं, यह नाम उन्हें बी.आर. अंबेडकर ने दिया था, उन्हें अपनी इज्जत वापस पाने की अपनी कोशिशों में एक प्रेरणा के तौर पर याद करते हैं। शायद भारत के अछूतों की तरह समाज में कहीं भी किसी और को इतनी बुरी हालत में नहीं डाला गया है। इन ग्रुप्स से जुड़े लाखों लोगों ने इज्जत वाले लोगों के तौर पर फिर से उभरने के लिए लड़ाई लड़ी है, और उस नई शुरुआत में अंबेडकर का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

अंबेडकर की पॉलिटिकल सोच आज भी न सिर्फ भारत की पॉलिटिक्स के लिए बल्कि आम तौर पर साउथ एशिया की पॉलिटिक्स के लिए भी बहुत काम की है। साउथ एशियाई देश आज गहरे संकटों का सामना कर रहे हैं, वे अपने समाज को स्थिरता की गारंटी देने के लिए पॉलिटिकल और सोशल इंस्टीट्यूशन डेवलप नहीं कर पा रहे हैं, खासकर सदियों से चले आ रहे दमनकारी और सामाजिक पॉलिटिकल सिस्टम की

वजह से, जो जाति व्यवस्था के कारण उनकी विरासत बन गए थे। जाति व्यवस्था असल में ब्राह्मणों नाम के एक छोटे से ग्रुप के दबदबे का सिस्टम था, जिन्होंने अपने समय के सोशल कंट्रोल सिस्टम में चालाकी के सबसे एडवांस्ड रूप इस तरह डेवलप किए कि सदियों तक भी वे अपना दबदबा बनाए रख सकें। जाति व्यवस्था को बनाने और बनाए रखने के साथ-साथ दमन की प्रक्रिया में जो नुकसान हुआ, वह सभी लोगों की आज की समस्याओं से निपटने की इंटेलिजेंस, क्रिएटिविटी और क्षमता के विकास में रुकावट बन गया है। उनका अतीत उन्हें अपनी गुलामी में जकड़े हुए है। ये बंधन उनके नर्वस सिस्टम में इतने गहरे बैठे हैं कि पीढ़ी दर पीढ़ी लोग ऐसी सोच के साथ पैदा होते हैं जो उन्हें अपने सोशल कॉन्टेक्ट में एक-दूसरे के साथ आज़ादी और गहरे सोशल कम्युनिकेशन की क्षमता को महसूस करने से रोकती है। साउथ एशियन कल्चर में गहरी फूट इन सदियों के हल्के सोशल कंट्रोल की वजह से बनी थी। कंट्रोल के तरीके धर्म और रीति-रिवाजों के नियमों के तौर पर बनाए गए थे, जिनसे इंसान की ज़िंदगी बहुत गहराई से जुड़ी हुई थी।[4,5,6]

व्यक्तिगत आज़ादी का विचार इस सांस्कृतिक विरासत के लिए बहुत अलग है। लोगों को इमोशनली और साइकोलॉजिकली फंसाने वाला पेचीदा सिस्टम, अलग-अलग तरह की पौराणिक मान्यताओं के ज़रिए, इस अतीत की वजह से सभी के मन में इस तरह बैठ गया है।

“अंबेडकर की पॉलिटिकल सोच आज भी न सिर्फ़ भारत की पॉलिटिक्स के लिए बल्कि आम तौर पर साउथ एशिया की पॉलिटिक्स के लिए भी बहुत काम की है। साउथ एशियाई देश आज गहरे संकटों का सामना कर रहे हैं, वे अपने समाज को स्थिरता की गारंटी देने के लिए पॉलिटिकल और सोशल इंस्टीट्यूशन डेवलप नहीं कर पा रहे हैं, इसका मुख्य कारण सदियों से चले आ रहे दमनकारी और सामाजिक पॉलिटिकल सिस्टम हैं जो जाति व्यवस्था के कारण उनकी विरासत थे।”

भारत के कुछ महान नेताओं ने इस इतिहास से बनी भारतीय मन की अंदरूनी गुलामी की गहराई को समझा। कुछ ने इसे सिर्फ़ एक फ़िलॉसफ़िकल प्रॉब्लम के तौर पर देखा, जैसे कि श्री अरबिंदो। श्री अरबिंदो ने अपनी ज़िंदगी का बाद का हिस्सा युवा पीढ़ी को उस सोच से बाहर निकालने में लगाया जो उनके समाज में घुस गई है, और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सबको पीछे धकेल रही है। उन्होंने कहा कि भारत में जो महान क्रिएटिविटी थी, वह किसी समय बुरी तरह खत्म हो गई थी।

विचार-विमर्श

यह बी.आर. अंबेडकर ही थे जिन्होंने भारतीय क्रिएटिविटी के पिछड़ने का कारण पहचाना, जो दूसरे दक्षिण एशियाई देशों के लोगों की सोच के पिछड़ने का भी सोर्स है। उन्होंने देखा कि सिर्फ़ दिमागी कसरत से इस बंधन को नहीं तोड़ा जा सकता। जिसे तोड़ने की ज़रूरत थी, वह थे सामाजिक बंधन जिन्होंने सदियों से लोगों के दिमाग को बांध रखा था। उन्होंने इस प्रोसेस को समझने के लिए अपना समय दिया। और उनका समझने का तरीका अतीत की बातों को पढ़ना नहीं था, बल्कि उस बड़े देश में फैले भारत के आम लोगों की ज़िंदगी को समझना था।[7,8,9]

भारत की गरीबी में वह सबूत था जिसे देखना ज़रूरी था ताकि यह पता लगाया जा सके कि इस भयानक विरासत से लोगों की ज़िंदगी कैसे बर्बाद हो रही है।

जवाहरलाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया में पुराने समय में भारत की शान के बारे में बात करने की कोशिश की है। दूसरी तरफ़, अंबेडकर यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि कैसे शान खो गई और कैसे भारतीय दिमाग और भारतीय भावना की गुलामी हुई और नतीजतन भारतीय जीवनशैली आज जैसी है वैसी हो गई। इसी खोज में वह काबिलियत और आज्ञादी देने वाला असर है जिसकी ज़रूरत न सिर्फ़ आम लोगों को बल्कि पूरे देश को आज के समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए है।

अंबेडकर इतिहास और डेमोक्रेसी के लिए संघर्ष के दौरान बनी पॉलिटिकल थ्योरीज़ के अच्छे जानकार थे। उन्हें दुनिया में माइनॉरिटी की समस्याओं के इतिहास की भी गहरी जानकारी थी। वह समझते थे कि अगर किसी माइनॉरिटी की समस्या का ठीक से हल नहीं किया गया तो झगड़ों में पूरी सभ्यताएं खत्म हो सकती हैं, जिससे न सिर्फ़ माइनॉरिटी बल्कि पूरा समाज खत्म हो जाएगा।

नई पीढ़ी को अंबेडकर के बारे में और ज़्यादा पढ़ने की ज़रूरत है, जो उन समस्याओं का हल ढूंढ रहे हैं जिनका उन्हें अक्सर लगता है कि कोई हल नहीं है। कई लोगों ने जो आसान हल ढूंढे हैं, वे काम नहीं आए। इन गंभीर समस्याओं से निपटने की सभी संभावनाओं को तलाशने के लिए गहराई से जानने की ज़रूरत है। अंबेडकर के काम में ऐसी बड़ी बातें हैं जिन्हें अभी खोजा जाना बाकी है और उस खोज में उप-महाद्वीप के अतीत की असली शान फिर से उभर सकती है। आज बौद्ध धर्म के लिए दिखावटी सम्मान को अंबेडकर ने चुनौती दी, जो खुद भारत में बौद्ध धर्म के असली इतिहास को फिर से खोजने की कोशिश करके बौद्ध बन गए थे। भारत में बौद्ध धर्म का खत्म होना भारत में जाति संघर्षों का नतीजा था और उस संघर्ष में ब्राह्मणों ने जीत हासिल करने और अपना दबदबा वापस पाने के लिए जो पक्का इरादा बनाया था, उसे भी अंबेडकर ने लगातार उजागर किया।

बिना किसी शक के, बाबा साहेब अंबेडकर मॉडर्न साउथ एशिया के इतिहास के सबसे महान पॉलिटिकल लीडर हैं, धर्म के सोशल कंट्रोल और आज के इतिहास में इसके असर के बीच के लिंक को समझने के मामले में। जहां महात्मा गांधी ने आज्ञादी का मतलब कॉलोनिअल पावर से छुटकारा पाने और लोकल अमीर लोगों को पावर देने के तौर पर देखा, वहीं अंबेडकर ने भारतीयों की आज्ञादी को जाति व्यवस्था से बनी सांस्कृतिक गुलामी से छुटकारा पाने के नज़रिए से देखा। उन्होंने सदियों पुरानी ऐसी प्रथाएं देखीं जिनमें लोगों पर सोशल कंट्रोल मुख्य रूप से भाषा, रीति-रिवाजों और 'एथिकल कोड' के इस्तेमाल से किया जाता रहा है, जिससे लोगों पर जाति का दबदबा और मज़बूत होता गया।[10,11,12]

अंबेडकर ने भारतीय इतिहास में आज़ादी के पल भी देखे। बौद्ध धर्म को उन्होंने इसी तरह देखा। उन्होंने बुद्ध को अपना गुरु कहा। उन्होंने कहा कि उन्होंने डेमोक्रेसी के सिद्धांत पश्चिमी फिलॉसफर से नहीं, बल्कि अपने गुरु गौतम बुद्ध से सीखे।

“मेरा व्यक्तिगत दर्शन”

“सच कहूँ तो, मेरी सोशल फिलॉसफी तीन शब्दों में छिपी हुई है: लिबर्टी, इक्वालिटी और फ्रेटरनिटी। लेकिन, कोई यह न कहे कि मैंने अपनी फिलॉसफी फ्रेंच रेवोल्यूशन से ली है। मैंने नहीं ली है। मेरी फिलॉसफी की जड़ें धर्म में हैं, पॉलिटिकल साइंस में नहीं। मैंने उन्हें अपने गुरु, बुद्ध की शिक्षाओं से लिया है। उनकी फिलॉसफी में, लिबर्टी और इक्वालिटी की जगह थी: लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि अनलिमिटेड लिबर्टी इक्वालिटी को खत्म कर देती है, और पूरी इक्वालिटी लिबर्टी के लिए कोई जगह नहीं छोड़ती। उनकी फिलॉसफी में, कानून की जगह सिर्फ लिबर्टी और इक्वालिटी के उल्लंघन के खिलाफ एक सुरक्षा के तौर पर थी; लेकिन उनका मानना नहीं था कि कानून लिबर्टी या इक्वालिटी के उल्लंघन की गारंटी हो सकता है। उन्होंने फ्रेटरनिटी को सबसे ऊँची जगह दी, जो लिबर्टी या इक्वालिटी या फ्रेटरनिटी को नकारने के खिलाफ एकमात्र असली सुरक्षा थी, जो भाईचारे या इंसानियत का दूसरा नाम था, जो फिर से धर्म का दूसरा नाम था।

“कानून सेक्युलर है, जिसे कोई भी तोड़ सकता है, जबकि भाईचारा या धर्म पवित्र है जिसका सभी को सम्मान करना चाहिए। मेरी फिलॉसफी का एक मिशन है। मुझे धर्म बदलने का काम करना है: क्योंकि, मुझे त्रिगुण थ्योरी को मानने वालों को इसे छोड़कर मेरी थ्योरी माननी है। आज भारतीय दो अलग-अलग आइडियोलॉजी से चलते हैं। संविधान की प्रस्तावना में बताया गया उनका पॉलिटिकल आइडियल आज़ादी, बराबरी और भाईचारे की ज़िंदगी की बात करता है। उनके धर्म में शामिल उनका सोशल आइडियल, उन्हें मना करता है।” डॉ. बी.आर.अंबेडकर (3 अक्टूबर, 1954 को ऑल-इंडिया रेडियो पर एक भाषण के ब्रॉडकास्ट से)

इस मशहूर रेडियो ब्रॉडकास्ट में, उन्होंने डेमोक्रेसी में अपने विश्वास की बेसिक बातों को संक्षेप में बताया कि इसकी जड़ें बुद्ध की शिक्षाओं में हैं। उन्होंने अपनी ज़िंदगी के कई साल बौद्ध धर्म की पढ़ाई में भी लगाए और बुद्ध की शिक्षाओं पर बड़ी किताबें लिखीं। 1936 में, एक भाषण में, जो अब एक पॉलिटिकल क्लासिक के तौर पर जाना जाता है, जिसका टाइटल था 'जाति का खात्मा', उन्होंने जाति की जड़ों को ब्राह्मणवाद द्वारा बनाए गए धर्म के आदर्शों पर आधारित बताया। उन्होंने कहा कि भले ही वह खुद उस परंपरा में पैदा हुए हैं, लेकिन वह उसी में नहीं मरेंगे। इस वादे को पूरा करते हुए, 20 साल बाद उन्होंने भारत के नागालैंड में हुए एक पब्लिक सेरेमनी में 500,000 से ज़्यादा फॉलोअर्स के साथ सबके सामने बौद्ध धर्म अपना लिया।[13,14,15]

अंबेडकर का बौद्ध धर्म एक माइनॉरिटी का बौद्ध धर्म था जो पूरे देश को आज़ाद कराने की कोशिश कर रहा था। अंबेडकर ने अलगाववाद का विरोध किया लेकिन दलितों पर जुल्म के अनोखे नेचर को हमेशा ध्यान में रखा। हालांकि, वह समझते थे कि जब तक पूरा देश उन परंपराओं को नहीं छोड़ देता जो उसके लोगों को जुल्मी सामाजिक कंट्रोल में रखती हैं, तब तक माइनॉरिटी को आज़ादी नहीं मिल सकती। वह पूरी तरह जानते थे कि अगर वह चाहें तो पॉलिटिकल उथल-पुथल मचा सकते हैं। उन्होंने जानबूझकर उस रास्ते से परहेज़ किया, भले ही इसमें मुश्किलें थीं। वह अकेले भारतीय नेता थे जिन्होंने दलितों की समस्या से निपटने के लिए महात्मा गांधी के सीमित नज़रिए का खुलकर विरोध किया था। हालांकि, उन्होंने अंग्रेजों से भारत की आज़ादी का आम बोझ उठाया और जवाहरलाल नेहरू की कैबिनेट में कानून मंत्री भी बने। असल में, वह उस कमेटी के चीफ ड्राफ्ट्समैन थे जिसने भारतीय संविधान का ड्राफ्ट तैयार किया था। वह समझते थे कि माइनॉरिटी डेमोक्रेसी को खत्म करके अपना हक नहीं जीत सकती। वह यह भी समझते थे कि माइनॉरिटी के संघर्ष को दबाकर, मेजॉरिटी खुद को भी बर्बाद कर रहे हैं। यह बात साउथ एशियन देशों के मॉडर्न कॉन्टेक्स्ट में भी कितनी सच है।

साउथ एशिया में ज्ञान की लड़ाई में अंबेडकर ने हमेशा रहने वाला योगदान दिया है। और इस योगदान को समझने की ज़रूरत है ताकि सभी साउथ एशियाई देशों में आज की समस्याओं से निपटने की कोशिश को आगे बढ़ाया जा सके।

परिणाम

“राष्ट्रवाद तभी उचित ठहराया जा सकता है जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग के भेद भुला दिए जाएं और उनमें सामाजिक बंधुत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाए।” डॉ. बी.आर. अम्बेडकर डॉ. भीम राव अम्बेडकर एक बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्हें एक विद्वान, लेखक, क्रांतिकारी, संविधान निर्माता और परिवर्तन के अग्रदूत के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने जीवन में छुआछूत और जाति व्यवस्था को लेकर काफी संघर्ष किया, क्योंकि छुआछूत और जाति के संदर्भ में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। इसलिए वे चाहते थे कि दलित समाज के लिए ऐसे सार्थक आयाम स्थापित किए जाएं ताकि वे भविष्य में अपने जीवन में ऐसी विकृतियों का शिकार न हों। इसलिए शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा समाज में परिवर्तन स्थापित किया जा सकता है। और यह परिवर्तन संविधान में ऐसे प्रावधान करने से होगा, जिसमें सभी को समान अवसर और सुविधाएं मिलें। देश में लोकतंत्र की सफलता के लिए स्वच्छ समाज, भाईचारा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना बहुत जरूरी है। भीमराव अम्बेडकर का पूरा जीवन मानव समाज की सेवा के लिए समर्पित था। भारत में सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता को पूरी तरह खत्म करने की कोशिश करते हुए उन्होंने संविधान में दलितों के एक बड़े हिस्से को बराबरी का दर्जा दिलाने का महान काम किया और साथ ही अपने लेखन और महान लेखन के ज़रिए गुलाम भारत को आज़ादी दिलाने की कोशिश में दलित वर्ग को विचारों के ज़रिए संगठित करने का सफल काम भी पूरा किया। इसके साथ ही उन्होंने समाज उद्धारक और सामाजिक चेतना जगाने और महिलाओं की स्थिति सुधारने के क्षेत्र में भी अहम भूमिका निभाई। [16,17,18]

निष्कर्ष

भारत में जाति आधारित असमानता अभी भी कायम है, जबकि दलितों ने आरक्षण के माध्यम से एक राजनीतिक पहचान हासिल कर ली है और अपने स्वयं के राजनीतिक दलों का गठन किया है, बावजूद सामाजिक मानदंडों (स्वास्थ्य और शिक्षा) तथा आर्थिक मानदंडों का अभी भी अभाव है।

सांप्रदायिक धुवीकरण और राजनीति के सांप्रदायिकरण का उदय हुआ है। यह ज़रूरी है कि संवैधानिक नैतिकता की अंबेडकर की दृष्टि को भारतीय संविधान में स्थायी क्षति से बचाने के लिए धार्मिक नैतिकता का समर्थन किया जाना चाहिए।

इतिहासकार आर.सी. गुहा के अनुसार, डॉ. बी.आर. अंबेडकर अधिकांश विपरीत परिस्थितियों में भी सफलता का अनुठा उदाहरण हैं। आज भारत जातिवाद, सांप्रदायिकता, अलगाववाद, भाषा असमानता आदि जैसे कई सामाजिक-आर्थिक जबड़े का सामना कर रहा है। हमें अपने भीतर अंबेडकर की भावना को खोजने की ज़रूरत है, ताकि हम इन जबड़ों से खुद को बाहर निकाल सकें।[19,20]

संदर्भ

1. "BR Ambedkar's anniversary: His quotes on gender, politics and untouchability". 6 दिसंबर 2017. 23 जून 2018 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019. {{cite web}}: Cite has empty unknown parameter: |dead-url= (help)
2. "Rescuing Ambedkar from pure Dalitism: He would've been India's best Prime Minister". Firstpost. 25 अप्रैल 2019 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
3. "Do we really respect Dr Ambedkar or is it mere lip service?". DNA India. 6 दिसंबर 2014. 17 अगस्त 2018 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
4. "Ambedkar in Modi's quiver, says Gandhis insulted father of Indian Constitution". Deccan Chronicle. 15 अप्रैल 2014. 16 जून 2018 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
5. "Home for Ambedkar 'house' - Maharashtra to buy UK bungalow where Dalit icon lived". www.telegraphindia.com. 5 नवंबर 2018 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
6. Desk, FPJ Web (11 अप्रैल 2016). "Milestones achieved by Dr. Babasaheb Ambedkar". 6 अक्टूबर 2018 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019. {{cite web}}: |last= has generic name (help)
7. "Archives released by LSE reveal BR Ambedkar's time as a scholar". hindustantimes.com/. 9 फरवरी 2016. 23 जून 2018 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
8. "Zee जानकारी : किसने रची थी डॉ॰ आम्बेडकर के बारे में भ्रम फैलाने की साजिश". Zee News Hindi. 15 अप्रैल 2016. 8 जनवरी 2019 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
9. http://ccis.nic.in/WriteReadData/CircularPortal/D2/D02est/12_6_2015_JCA-2-19032015.pdf Archived 2015-04-05 at the वेबैक मशीन Ambedkar Jayanti from ccis.nic.in on 19th March 2015

10. Ghildiyal, Subodh (29 मई 2018). "Bhimrao Ambedkar cult spreading across world". 20 जुलाई 2019 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 20 जुलाई 2019 – via The Economic Times.
11. "Bhim: Cult of Bhim spreading across world | India News - Times of India". The Times of India. 3 अगस्त 2019 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 20 जुलाई 2019.
12. "यहां देखें भीमराव आंबेडकर के जीवन से जुड़े कुछ रोचक तथ्य". प्रभात खबर. 6 दिसंबर 2023.
13. Jaffrelot, Christophe (2005). Dr. Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System. New York: Columbia University Press. p. 2. ISBN 0-231-13602-1.
14. Pritchett, Frances. "In the 1890s" (PHP). 7 सितंबर 2006 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 2 अगस्त 2006.
15. Menon, Dilip M. "What's in a name?: Those who invoke Ambedkar are complicit in a forgetting, much like Gandhi". Scroll.in. 13 अगस्त 2019 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
16. "Mahar". Encyclopædia Britannica. britannica.com. 30 नवम्बर 2011 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 12 जनवरी 2012.
17. Ahuja, M. L. (2007). "Babasaheb Ambedkar". Eminent Indians : administrators and political thinkers. New Delhi: Rupa. pp. 1922–1923. ISBN 8129111071. 23 दिसम्बर 2016 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 17 जुलाई 2013.
18. "आम्बेडकर गुरुजींचं कुटुंब जपतंय सामाजिक वसा, कुटुंबानं सांभाळल्या 'त्या' आठवणी". divyamarathi. 26 दिसंबर 2016. मूल से से 28 मई 2019 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथि: 25 अप्रैल 2019.
19. Pritchett, Frances. "In the 1900s" (PHP). 6 जनवरी 2012 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 5 जनवरी 2012.
20. Pritchett, Frances. "In the 1900s" (PHP). 6 जनवरी 2012 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथि: 2 अगस्त 2006.